अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 24 जुलाई, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) श्रमण जीवन की साधना का मार्मिक विवेचन उपलब्ध होता है-

(क) उत्तराध्ययन सूत्र में (ख) नन्दी सूत्र में

(ग) दशवैकालिक में (घ) आचारांग में ( )

(b) आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम है-

(क) लोकसार (ख) शस्त्रपरिज्ञा

(ग) नव ब्रह्मचर्य (घ) विमोक्ष ( )

(c) आचारांग में कर्त्तव्य पालन का स्वरूप देख सकते हैं, अतः यह कहलाता है -

(क) अंग (ख) आदर्श

(ग) आचीर्ण (घ) अजाति ( )

(d) केशीकुमार श्रमण में ज्ञान नहीं था -

(क) अवधिज्ञान (ख) श्रुतज्ञान

(ग) मनःपर्यव ज्ञान (घ) केवलज्ञान ( )

(e) समभाव की मर्यादा तोड़ना है -

(क) कषाय (ख) समता

(ग) क्रूरता (घ) कोलाहल ( )

(f) शीतल शरीर में उष्ण प्रकाश का नियामक कर्म है -

(क) उपघात नाम (ख) निर्माण नाम

(ग) आतप नाम (घ) पराघात नाम ( )

(g) पात्र को ज्ञानादि सद्‌गुण प्रदान करना, धर्म है-

(क) संयम (ख) त्याग

(ग) आकिंचन्य (घ) तप ( )

(h) आहारक काययोग में बंध योग्य प्रकृतियों की संख्या हैं -

(क) 67 (ख) 63

(ग) 62 (घ) 74 ( )

(i) तेइन्द्रिय जीव में दूसरे गुणस्थान में बंध योग्य प्रकृतियों की संख्या हैं-

(क) 109 (ख) 97

(ग) 96 (घ) 101 ( )

(j) 'कोक्क' धातु का अर्थ है -

(क) सुनना (ख) करना

(ग) पालना (घ) बुलाना ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'धूत' का अर्थ है किसी वस्तु पर लगे मैल को दूर करके उसे स्वच्छ बना देना। ( )

(b) द्रव्य और भाव शस्त्रों को जानकर उनका परित्याग करना साधना का अंतिम चरण है। ( )

(c) आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के शस्त्र परिज्ञा नामक प्रथम अध्ययन के 9 उद्देशक हैं। ( )

(d) जीव अरूपी होने के साथ अप्रतिहत गति वाला है। ( )

(e) छद्मस्थ जीव आकाशास्तिकाय को नहीं देख सकता है। ( )

(f) कषाय मोहनीय का नो कषाय मोहनीय में संक्रमण नहीं होता है। ( )

(g) सभी दिशाओं में रहे आत्म-प्रदेशों द्वारा कर्मस्कन्धों का ग्रहण होता है। ( )

(h) जिन भगवान में 12 परीषह संभव है। ( )

(i) नवदीक्षित अध्ययनशील साधु को शैक्ष कहते हैं। ( )

(j) विषय में, बारे में, अर्थ में तथा समयबोधक शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं अर्थात्मक आगम का प्रणेता हूँ। .....

(b) मेरे कारण ही जीव चतुर्गति रूप द्रव्य लोक में परिभ्रमण करता है। .....

(c) मैं वास्तविक स्व-अस्तित्व का विस्मरण हूँ। .....

(d) मैं वस्तु-तत्त्व का यथार्थ परिज्ञान हूँ। .....

(e) मुझमें आत्मा के लिए पुरुष शब्द का प्रयोग हुआ है। .....

(f) मैं धर्मास्तिकाय आदि दस वस्तुओं को नहीं देख सकता हूँ। .....

(g) मैं घृणा उत्पादक कर्म हूँ। .....

(h) मैं विवेकपूर्वक की गई सत्प्रवृत्ति हूँ। .....

(i) मेरा बंध 4 से 8 गुणस्थान तक की होता है। .....

(j) मुझमें गुणस्थान 1 से 13 व समुच्चय बंध 104 का होता है। .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में लिखिए - **14x2 = (28)**

(a) अठारह द्रव्य दिशाओं के नाम लिखिए।

.....

.....

(b) 'सुत्ता अमुणी मुणिणो सया जागरंति' का अर्थ लिखिए।

.....

.....

(c) सत्य के कोई दो अर्थ लिखिए।

.....

.....

(d) **परिघेतत्वा, उद्दवेयव्वा के अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(e) **देवलोक में उत्पन्न हुए देव के मनुष्य लोक में नहीं आने का कोई एक कारण लिखिए।**

.....

.....

(f) **संज्वलन कषाय किसे कहते हैं?**

.....

.....

(g) **निर्माण नामकर्म को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

(h) **अनुप्रेक्षा किसे कहते हैं?**

.....

.....

(i) **गण और कुल में क्या अन्तर है?**

.....

.....

(j) **दुःख उत्पत्ति के प्रमुख कारण क्या हैं?**

.....

.....

(k) **सम्पूर्ण कर्मों एवं तदाश्रित भावों के नाश होने पर कौनसे कार्य होते हैं?**

.....

.....

(l) **तीसरी नरक में दूसरे गुणस्थान में कम होने वाली चार प्रकृतियाँ लिखिए।**

.....

.....

(m) **मनुष्य लब्धि अपर्याप्त में नहीं बंधने वाली 11 प्रकृतियों के नाम लिखिए।**

.....

.....

(n) **औदारिक मिश्र काययोग में पहले गुणस्थान में कम होने वाली 5 प्रकृतियाँ लिखिए।**

अथवा

क्षयोपशम समकित में गुणस्थान व समुच्चय बन्ध लिखिए।

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के पाँचवें अध्ययन के तीसरे उद्देशक का सार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(b) **सम्यक्त्व अध्ययन के द्वितीय उद्देशक का सार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(c) **मनुष्य किन आठ हेतुओं से कर्म समारंभ अर्थात् हिंसा करते हैं?**

.....

.....

.....

.....

(d) **'पणया वीरा महावीहिं' का विवेचन लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(e) **'आणाए मामगं धम्मं' का विवेचन लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(f) **नरक से मनुष्य लोक में नहीं आने के क्या कारण हैं?**

.....

.....

.....

.....

(g) **क्षमा की साधना के पाँच उपाय लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(h) **सूक्ष्म सम्पराय एवं छद्मस्थ वीतराग में कितने व कौन-कौनसे परीषह संभव हैं?**

.....

.....

.....

.....

(i) **लोप विधान सन्धि के प्रमुख नियम क्या-क्या हैं?**

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **निम्न वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए।**

स्वामी में दया है- .....

गाय में शक्ति होती है- .....

बहुओं में धैर्य होता है- .....

(k) **निम्न शब्दों का संधि विच्छेद करके संधि का नाम भी लिखिए।**

पुहवीस- .....

महोसव- .....

किंति- .....

(l) **शुक्ल लेश्या में बन्ध स्वामित्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(m) **कार्मण काययोग में बन्ध स्वामित्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(n) **सातवीं नारकी के जीव के बन्ध स्वामित्व लिखिए।**

अथवा

सिद्धों के आत्मप्रदेशों की अवगाहना लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....